REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

हिंदी बाल साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई
एम.जे.एस.कॉलेज, श्रीगोंदा , ता.श्रीगोंदा जि.अहमदगनर.

प्रस्तावना :

बाल साहित्य का सरल अर्थ लिया जाए तो बालकों के लिए सृजनात्मक साहित्य है। बाल साहित्य निर्माण का इतिहास उतना ही ही पुराना है जितना कि मनुष्य के विकास क्रम का इतिहास । मानव के जन्म के साथ जो बातें संस्कार धर्म, संस्कृति, और नीति आदि बातें जुडकर आती है। उसका सफल संवाहक या माध्यम बाल साहित्य है। उसका विकास मौखिक, लिखित और मंचित रूप में सफलता पूर्वक हुआ है। प्राचीन युग का बाल साहित्य पुरा लोक कथा और काव्य रूप में आज भी सुरक्षित है। यद्यपि यह साहित्य केवल बालकों के लिए नहीं है। मानव के जीवन संघर्ष और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करता है। इसी में बाल साहित्य के तत्व समाहित है।

भारत में बाल साहित्य की परंपरा के विकास का आरंभ प्राकृत भाषा के पूर्व तक से लेकर सहस्त्रों वर्षो की संस्कृत साहित्य की विशाल परंपरा है। जिसमें वेदों के बाद वाल्मिकि 'रामायण' और व्यासकृत 'महाभारत' का सृजन एक स्वर्णमयी आरंभ है। प्राचीन काल के साहित्यकारों का उद्देश्य बाल साहित्य के निर्माण स्वतंत्र रूप से करना नहीं था। अपने साहित्य से वह अनेक उद्देश्यों की पूर्ती वह एक साथ करता था। जैसे धर्म, दर्शन,नीति,संस्कृत और आचार विचार की शिक्षा देना। प्राचीन बाल साहित्य मौखिक रूप का आधार रामायण (वाल्मिकी), महाभारत (व्यास), कथा सरित्सार, जातक कथाएँ, हितापदेष (नारायण पंडित), पंचतंत्र (विष्णुवर्मा) तथा कवि भास का संस्कृत नाटक बालचरित्र उल्लेखनीय है।

संस्कृत साहित्य में उपल्बध बाल रचनाऐं भारत तथा विश्व के अनेक देशों में न्युनाधिक स्थान प्राप्त कर चुकी है। भारत में बांग्ला भाषा में विपुल बाल साहित्य लिखा गया है। इस के बाद तमिल,तेलगु, मलयालम, उडिसा,मराठी,गुजराती आदि भाषाओं का बाल साहित्य हिंदी की तुलना में सराहनीय माना जा सकता है। हिंदी बाल साहित्य का विकास मंथर गति से हुआ है। यह साहित्य प्रेरणास्पद महापुरूषों की कथाए , रोचक — मनोरंजक गल्पें , शिक्षा गीत, लोरी ,पहेली आदि लोकप्रिय रूप में लिखा गया है।

हिंदी बाल साहित्य को विभिन्न पध्द्तिओ से वर्गीकृत करने का सफल प्रयास किया है। इस वर्गीकरण बाल मनोविज्ञान , हिंदी साहित्य का कालविभाजन तथा हिंदी भाषा विकास आदि आधारभूत तत्वों का आधार लेकर डॉ. श्रीपाद ,डॉ. ज्योति स्वरूप जैसे विद्वानोंने हिंदी बाल साहित्य का वर्गीकरण किया है। हिंदी का बाल साहित्य रचनेवाले स्वतंत्र साहित्यकार भले ही न के बरोबर हो किंतु इसी कालखंड में बडों के लिए लिखनेवाले रचनाकारों ने समृद्ध बाल साहित्य का सृजन किया है। हम सभी लोग जानते है कि बाल साहित्य का मूल रूप मौखिक ही है। हम हिंदी साहित्यकारो के बाल साहित्य को निम्न बिंदुओं के आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास कर सकते है।

लोक साहित्य मौखिक परम्परा से प्राप्त साहित्य है जिसे संकलित करके लिखित रूप देने का सफल प्रयास हो रहे है। लोक साहित्य के अंतर्गत एक धारा वह भी है। जिसकी रचना बालकों ने और पालकों ने सहज रूप में की है। इसमें बालको द्वारा खेल गीत, समूह गान और खेल कथाए उपलब्ध होते है। जिसका उद्देश मनोरंजन,खेल और शिक्षा संमिश्र रूप में है

'अक्कड बक्कड बम्बे भो अस्सी नब्बे पुरे सौ
सौ मे लागा धागा चोर निकलकर भागा।' (1)

वर्तमान में शिशु गीत (नर्सरी राइम्स) लिखी जाती है। लोक बोलियों में यह पहले से ही थे। गीत के साथ पशु पक्षियों और पेड पौधों में अपने आप ही मानवीकरण की प्रवृत्ति को उजागर करके कहानियों एक दूसरे को कही जाती रही है। डॉ. श्रीपादजी ने बाल साहित्य का वर्गीकरण मुख्य रुप से दो विभागों में किया है, जिसमें बाल लोक कहानियाँ और बाल लोक काव्य है। इन दोनों की तुलना में बाल लोक काव्य परंपरा को संजोया नहीं गया। हिंदी बाल लोक साहित्य में पालकों द्वारा बच्चों के लिए लोरिया उत्सव गीत और बाल कहानिया को रचनाए हुई है। हम सभी जानते है कि बालक के काव्यसंस्कार का निर्माण सबसे पहले लोरियों से ही होता है, इसलिए हिंदी भाषी प्रदेश का बाल लोक काव्य में लोरी प्रसिध्द् है—

लोरी :— "निंदिया तोला आवे रे, निंदिया तोला आवे रे, सुति जाबे, सुति जाबे, बाबु सुति जाबे रे, झनि रोबे झनि रोबे, बाबु झनि रोबे रे, तोर दाई गै है बाबु , मउहा बिने बर रे, तोर बाबा गै है बाबू , खेत कोडारे रे चंदा मामा आवनी दुध भात खावनी " (2)

पहेली :— " मीठा गाना गाती है जो, बाग बाग में जाती है जो
लगती सबको प्यारी, उत्तर दो या फिर जल्दी से, मानो अपनी हारी । "(3)

हिंदी बाल साहित्य का विकास हिंदी साहित्यक विधाओं के साथ ही हूआ, पर इसका मुखर रूप भारतेंदु युग में ही प्राप्त होता है। इसके प्रारंभ में आदि काल में 'अमीर खुसरों ', भक्तिकाल में 'सूरदास','रसखान' आदि के साहित्य को बाल मनोविज्ञान का साहित्य मान सकते है। इसके बाद हिंदी भाषी प्रदेशों में —

''हाथी घोडा पालकी, जै कन्हैया लाल की,
बरसो राम धडाके से बुढीया मर गई फाके से '

ऐसे बाल गीतों की रचना की गई। हिंदी में पुस्तके लिखने की व्यवस्था 1803 में फोर्ट विल्यम कॉलेज की स्थापना के कारण हुई। खडी बोली विकास के आधार स्तंभ मुंशी सदासुखलाल (सुख सागर), सैय्यद इंशा अल्लाह खॉ (रानी केतकी की कहानी) लल्लूलाल और सदल मिश्र (नसिकेतोपाख्यान) है, जिन्होंने बालोपयोगी साहित्य का निर्माण किया। इसके बाद राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद का नाम महत्वपूर्ण है कयोंकि वे शिक्षा विभाग से जुडे थे और शैक्षिक बाल साहित्य निर्माण की उनपर जिम्मेदारी थी। रामचंद्र तिवारी कहते है, ''राजासाहब की कृतियों में से अधिकांश विद्यार्थीयों कों दृष्टि में रखकर लिखी गई है। हिंदी बाल साहित्य विकास क्रम की महत्वपुर्ण कडी राजासाहब माने जाते है।''(4) उन्होंने छोटा भूगोल हस्तमालक, स्वयंबोधक उर्दू , वर्णमालाए इतिहास तिमिर नाशक, हिंदी व्याकरण, आलसियों का कोडा, राजा भोज का सपनाए बच्चो का इनाम, लडकों की कहानी तथा बीर सिंह वृत्तांत आदि संस्कार क्षम साहित्य सृजन किया है। इस के साथ लल्लूलाल ने संस्कृत और ब्रज से बालोपयोगी तीन कृतियॉ अनुदित की जिसमें 1. सिंहासन बत्तीसी 2. बैताल पच्चासी और 3. राजनीति महत्वपूर्ण रचनाएँ है।

भारतेंदुजी का जो योगदान हिंदी साहित्य में उन्मायक के रूप में है वही बाल साहित्य में है। भारतेंदुजी ने बालको शिक्षा देने के लिए 'चौखम्बा' स्कूल की स्थापना की थी। यह अतिश्योक्ति नहीं होगी की, बालकों के लिए 'सत्य हरिश्चंद्र' बाल नाटक लिखकर आधुनिक युग में इन्होंने बाल नाटय परंपरा का आरंभ किया। इस दृष्टि से श्रीपादजी ने इन्हें हिंदी का प्रथम बाल नाटककार माना है। भारतेंदुजी ने अंधेर नगरी और अन्य फुटकर बाल साहित्य का निर्माण किया। इसी कडीं में फ्रेडरिक पिकांट का नाम महत्वपूर्ण है। जिन्होंने 1. बाल दिपक 2. विकटोरीया चरित्र दो रचनाए लिखी जिस बिहार प्राप्त की स्कुली शिक्षा के पाठयक्रम में लगाया गया ।

द्विवेदी युग का हिंदी बाल साहित्य के प्रति सम्यक और स्वस्थ दृष्टिकोण रहा है। इसी कालखंड में बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी युग में स्वतंत्र रूप से हुआ है। जिसमें बाल–सखाए विद्यार्थी , कुमार , शिशु,

और खिलौना आदि बाल पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि हिंदी के मान्यवर रचनाकार अपनी बाल केंद्रीत रचनाओं को प्रकाशित करते थे। इनमें हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, गया प्रसाद सनेही, कामता प्रसाद गुरू , रामनेरश त्रिपाठी, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद्र आदि का योगदान रहा है। हिंदी बाल कथा साहित्य में प्रेमचंद्रजी की दृष्टि विशाल रही है। इनके 1. जंगल की कहानिया (1936) 2. कुत्ते की कहानी (1936) और 3.बाल, तलवार और त्याग (1906) इन तीनों पुस्तको में संस्कार नीति चरित्र संवर्धन आदि उद्देश को लेकर रचना हुई है। इन सभी साहित्यकारों के बाल कविताओं के कुछ उदाहरण हम देख सकते है।

1.बिखरे मोती न्यारे है,। या चमकीले तारे है।
सुधरी नीली चादर पर , सुन्दर फुल पसारे है। (5) – **हरिऔध**

2.पानी बरसे छम छम छम , बिजली चमके चम चम चम।
ढोलक बाजे धम धम धम, आओ दौंड धम धम धम ।। (6) –**रामनरेश त्रिपाठी**

3.मामा आए, मामा आए, मामा आए, क्या क्या लाए
मामा लाए चना चबेना, मामा लाए तोता मैना(7) –**अमरनाथ**

4.बिन्नी की गाडी, बिन्नी अनाडी, ले चला अगाडी, आ गई पहाडी
छुट गई गाडी, लुढकी पिछाडी, पडी एक झाडी, फँस गई गाडी
रूक गई गाडी, लाओ कुल्हाडी, काटेंगे झाडी।(8) –**रामनरेश त्रिपाठी**

इस कालखंड में बाल नाटय परंपरा का विकास खेद जन्य है क्योंकि बाल रंगमंच का विकास स्वतंत्रता के बाद हो हुआ है। फिर भी बाल नाटकों में नरेद्र जी का 'राजपुत बालक', श्रीराम अग्रवाल जी का 'पुत्रोत्सर्ग ' रामनरेश त्रिपाठी जी का 'एकलव्य ' शिवनंदन कपूर का 'राजकुमारी का हौवा' , सादिक अलीजी का 'हमें मिलकर रहना चाहिए' ऐसे बाल नाटकों का प्रशंसनीय योगदान है। क्योकि इस कालखंड में रंगमंच बाल नाटय के लिए स्वतंत्र रूप मे नहीं था। इस प्रकार स्वतंत्रता पूर्व युग के बाल साहित्य में राष्ट्रप्रेम, प्रकृति प्रेम और संस्कारक्षम मनोरजंन परक साहित्य निर्माण हुआ है।

स्वतंत्रता के बाद बाल साहित्य का हिंदी में विकास सातवें दशक से अधिक उभरकर सामने आया है, जिसका कारण बाल साहित्य पर अनुसंधान और पत्रिकाओं का आश्चर्यजनक रूप से उभरकर आया। आलोचना, मधुमती जैसी पत्रिकाओ में बाल साहित्य विशेषांक प्रकाशित हुए हैं । इसी कालखंड में पराग पत्रिका द्वारा बाल नाटक प्रतियोगिता का आरंभ हुआ जिसके कारण बाल नाटय परंपरा विकसित हुई । 1970 के बाद हिंदी साहित्यकारों में सुप्रसिद्ध गीतकार वीरेन्द्र मिश्रजी के अभियान गीत जिसमें राष्ट्रीय चेतना उभरकर आई हैं ।

एक कदम, दो कदम, चार कदम!
आगे बढते जाएँ हिम्मतदार कदम!
हमसे जो टकराने आए इतना नहीं किसी में दम!(9)

बाल काव्य में प्रकृति का मनोहर चित्र उभरकर आया। जिसमें ओमप्राकष 'आदित्य' रमेश कुमार तेलंग, कल्पना व्यास, सुबोध कुमार त्रिवेदी, श्रीप्रसाद आदि बाल कवियों का योगदान उल्लेखनिय है। उदाः–

अम्बर में गूज उठीए, मेघों की किलकारी
धरती पर उग आई, छवियों की फुलवारी।(10) –जगदीश कुमार शर्मा

इस कालखंड में महत्वपूर्ण बात यह भी है की, नेहरूजी के बच्चों के प्रति अगाध प्रेम को देखकर उनका जन्मदिन चौदह नवंबर देशभर में बालदिन के रूप में मनया जाने लगा। बच्चो के वे चाचा बनकर वे सदा सदा

के लिए बच्चो के हो गए और देश के बच्चों को अपना एक स्वतंत्र उत्सव दिवस प्राप्त हो गया। इसके कारण हर प्रतिष्ठित पत्र –पत्रिका बाल दिवस पर बाल साहित्य का प्रकाशन करने लगी। स्वतंत्रता मिलने के बाद तो इस क्षेत्र में अत्यंत उल्लेखनिय प्रगति देखी जा सकती है। विष्णु प्रभाकर,जयप्रकाश भारती , राष्ट्र–बंधु, हरिकृष्ण देवसरे, क्षमा शर्मा, यादवेंद्र चंद्र शर्मा नलिन, दिविक रमेश, उषा यादव , देवेंद्र कुमार आदि कितने ही नाम गिनाए जा सकते है। कविता के क्षेत्र में भी जी अद्‌वितीय साहित्य रचा गया है, उसे ध्यान में रखते हुए स्व. जयप्रकाश भारती ने इस समय को बाल साहित्य का स्वर्णिम युग कहा था। स्वाधीन भारत में बाल साहित्य और साहित्यकार की भले ही घनघोर उपेक्षा होती आई हो रचनाओं की दृष्टि से निसंदेह यह युग स्वर्णिम युग है और विश्व की अन्य श्रेष्ठ बाल रचनाओं के लिए चुनौतीपूर्ण है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीप्रसाद , दामोदर अग्रवाल , शेरजंग गर्ग, बालकृष्ण गर्ग, रमेश तैलंग , प्रकाश मनु, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, रमेश कौशिक, कृष्ण शमल, अहद प्रकाश, श्यामसिंह शशि , जयप्रकाश भारती, राधेश्याम प्रगल्भ, श्याम सुशील आदि एक बहुत ही लंबी सूची के कुछ उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण बिंदू है। इनके अतिरिक्त बच्चन, भवानीप्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे जैसे कवियों ने भी बाल कविता जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज की है।

अगर पेड भी चलते होते, कितने मजे हमारे होते।
बॉध तने में उसके रस्सी , चाहे कहीं संग ले जाते
जहॉ कही भी धूप सताती, उसके नीचे झट सुस्ताते
जहॉ कहीं वर्षा हो जाती , उसके नीचे हम छिप जाते।
अगर पेड भी चलते होते, कितने मजे हमारे होते। (11)–दिविक रमेश

सन 1980 के बाद का समय हिंदी बाल कविता की उँचाइयों का समय या गौरव युग माना गया है क्योंकि प्रकाश मनु के शब्दों में , इस दौर को गौरव युग कहने का अर्थ यह है इस दौरा में बाल कविता में जितनी उर्जित, काव्य क्षमतापूर्ण संभावनापूर्ण और नए युग की चेतना से लैस प्रतिभाएँ मौजुद थीं, वे न इससे पहले थी और न बाद में ही नजर आती है। इस मत से पूरी तरह सहमत होना किसी भी सचेत पाठक के लिए कठिन होगा –विशेष रूप से उनके इस मत से कि वे न इससे पहले थीं और न बाद में नजर आती है। फिर उनके अतिरिक्त उत्साह को हटा कर उनके शेष भाव को ठीक माना जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद अब तक की पूरी कविता को दृष्टि में रखकर बात की जाए तो बाल साहित्य के अनेक उँचे शिखर उपलब्ध हो जाएँगे । निसंदेह इस समय में प्रभाकर माचवे, दामोदर अग्रवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीप्रसाद और शेरजंग गर्ग उँचे शिखरों में भी उँचे है।

जैसे– उदा. कितनी अच्छी कितनी प्यारी, सब पशुओं में न्यारी गाया,
सारा दूध हमें दे देती, आओ इसे पिला दें चाय। (12) –शेरजंग गर्ग

बाल दर्पण का 1982 से संपादन करनेवाले और हिंदी बाल कविता के इतिहारकार प्रकाश मनु के अनुसार आधुनिक काल की हिंदी की दस श्रेष्ठ रचनाएँ — 1. कुत्ते की कहानी (प्रेमचंद), 2.बजरंगी नौरंगी(अमृतलाल नागर), 3.बाल राज्य (भूपनारायण दीक्षित), 4.गीत भारती (सोहन लाल द्विवेदी), 5. बतूता का जूता (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना), 6. गणित देश और अन्य नाटक (रेखा जैन), 7.कमलेश्वर के बाल नाटक, 8. आटे–बाटे सैर–सपाटे (कन्हैयालाल मत), 9.तीनों बंदर महा धुरंधर (शेरजंग गर्ग की 51 कविताएँ) तथा 10.घडियों की हडताल (रमेश थानवी) (13) कई अन्य महम्वपूर्ण बाल साहित्यकार क्षितिज पर उदित हुए इन साहित्यकारों ने हिंदी बाल साहित्य को परिणाम और गुणवत्ता की दृष्टि से नई उँचाईयां प्रदान की हिंदी बाल साहित्य को स्वर्ण युग में पहुँचा दिया है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से लेकर विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं ने बाल साहित्यकारों को सशक्त माध्यम प्रदान किया है। सुधा, संदेश, पराग, मधुमती, चंपक, नटरंग, कुमार, बालभारती, शिशु, आलोचना, किशोर आदि पत्रिकाओं ने 1970 के कालखंड तक अपना सर्वाधिक योगदान हिंदी बाल साहित्य के लिए दिया है। 1970

के बाद षैक्षिक बाल प्रस्तुत हुवा है इसलिए उस कालखंड में चंदामामा , सूमन सौरभ, बालभारती, झरोखा, बालवाणी, शिशु सौरभ और चकमक जैसी पत्रिकाओं में सूचनात्क, विचारात्मक और भावनात्मक रूपमें हिंदी काल साहित्य लिखा गया है। इसमें चित्र कथाएँ, मोटु पतलु, चाचा चौधरी, विक्रम बेताल, आदि लोकप्रिय हुई है। हिंदी बाल साहित्य में इंटनेट पर ई – पत्रिकाओं में लिखनेवाल देवेंद्र कुमार देवेश , डॉ जगदीश ओम , आदिओं के नाम उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि, इक्कसवीं सदी बाल मनोविज्ञान की दृष्टी से सर्वाधिक चुनौती की सदी है क्योंकी बाल मानसिकता पर होनेवाले हिंसात्मक प्रभाव को अगर दुर करना है तो बाल साहित्यकारों को प्रभावी सदृढ और गंभीर लेखन आवश्यक है। हर्ष की बात तो यह है कि पहले हिंदी के साहित्यकार अन्य विधाओं में लिखने के साथ – साथ बच्चों के लिए थोडा बहुत लिख लिया करते थे। पर अब विशुद्ध रूपसे बाल साहित्य का एक वर्ग सामने आ रहा है जो बच्चों के अलावा अन्य किसी की प्रशंसा का मोहताज नहीं है। हिंदी के बाल साहित्यकारों का योगदान सराहनीय है परंतू बांग्ला के क्षेत्र की दृष्टी से उसका बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में व्यापक है। हिंदी साहित्य में स्थिति आशादायी नहीं है। नब्बे के दशक में एक बात महत्वपूर्ण है जिसमें बाल काव्य मंच का विकास मराठी ,गुजराती भाषाओं के साथ हिंदी मे होने लगा जिसमें आधुनिक वैज्ञानिक बाल नाटकों का निर्माण हुआ जिसमें उमंग (रेखा जैन) की भुमिका महत्वपुर्ण है। हिंदी बाल फिचर फिल्मों का पटकथा लेखन का विभाग एक आंदोलन के रूपमें हुआ है, जिससे हिंदी बाल साहित्य की विधाओं में एक सशक्त विधा का विकास महत्वपूर्ण है। जिसमें राष्ट्रीय युवा एवं बाल – विकास –फिल्म केंद्र संस्था महत्वपूर्ण भुमिका निभा रही है। वर्तमान परिवेश को देखकर श्री जयप्रकाश भारती कहते है, " जिस देश के पास समृद्ध बाल साहित्य नहीं है, वह उज्जवल भविष्य की आशा कैसे कर सकता है।" (14) वर्तमान बाल साहित्यकारों की जिम्मेदारी क्या हो सकती है यह एक बाल कवि कहते है –

उठो देश के लाल तुम्हे,धरती को स्वर्ग बनाना है।
तुम्हें आँधियों के आँगन में, दीपक जलाना है।
पर्वत रोक रहें कदमों को , शूल बिछे है राहों में ।
ज्ञान कैद है इस धरती का , अंधकार की बाहों में । (15)

- **संदर्भ सूची :–**

1- बालगीत संग्रह (मराठी–हिंदी–इंग्रजी) – सोनाली देशपांडे पृ. 12
2- हिंदी बाल साहित्य की रुपरेखा – श्रीपाद लोकभारती प्र.इलाहबाद पृ. 88
3- हिंदी बाल साहित्य की रुपरेखा – श्रीपाद लोकभारती प्र.इलाहबाद पृ. 94
4- **हिन्दी बाल साहित्यः एक अध्ययन - डा०हरिकृष्ण देवसरे - आत्म- एण्ड सं-दिल्ली** पृ.55
5- हिंदी बाल साहित्य की रुपरेखा – श्रीपाद लोकभारती प्र.इलाहबाद पृ. 121
6- वही.. पृ. 121
7- वही.. पृ. 123
8- वही.. पृ. 133
9- ई– पत्रिका – Hindi Nest.Com
10- ई– पत्रिका – Hindi Nest.Com
11- Jamshed Aazami Blog
12- ई– पत्रिका –मेरी दुनिया मेरे सपने – me.scientificworld.in/2013/02/samkalin-balsahitya
13- ई– पत्रिका –मेरी दुनिया मेरे सपने – me.scientificworld.in/2013/02/samkalin-balsahitya
14- ई– पत्रिका – Hindi Nest.Com
15- हिंदी सुलभभारती कक्षा 6 हनुमंत नायडू (MH Pune)

• सहायक संदर्भ सूची :–

1- हिंदी बाल साहित्य की रुपरेखा – श्रीपाद लोकभारती प्र.इलाहबाद
2- प्रेमचंद का कथेतर साहित्य – डॉ. आशा वर्मा सरस्वती प्र. कानपुर
3- **हिन्दी बाल साहित्यः एक अध्ययन - डा० हरिकृष्ण देवसरे - आत्म- एण्ड सं-दिल्ली.**
4- http://www.kavitakosh.org
5- http://www.abhivyakti-hindi.org/

LBP PUBLICATION